डीबीडबल्यू 173 की विशेषताएं

तीन वर्षो के गहन परीक्षणों एवं अध्ययन के फलस्वरूप डीबीडब्ल्यू 173 में निम्नलिखित विशेषताएं पायी गई है।

उत्पादकता

- डीबीडबल्यू 173 किस्म से औसतन 47.2 कु०/हेक्टेयर पैदावार मिलती हैं जो कि पिछली लोकप्रिय किस्म एचडी 3059 से 4.8: तथा डीबीडबल्यू 90 से 4.9: अधिक पाई गई हैं।
- सामान्य परिस्थितियों में डीबीडबल्यू 173 किस्म की उत्पादन क्षमता 52.0 कु०/हेक्टेयर पायी गई हैं

उष्ण सहिष्णुता

- इस किस्म का उष्ण संवेदनशीलता सूचकांक (एचएसआई) 0.98 होने के कारण इसमे उष्ण सहिष्णुता अधिक पाई गयी हैं
- इस किस्म में उष्ण सहिष्णुता होने के कारण यह किस्म अति पछेती बुआई के लिए भी उपयुक्त पाई गई हैं

रोग प्रतिरोधकता

- डीबीडबल्यू 173 पीला एवं भूरा रतुआ रोगों के लिए प्रतिरोधी है।
- इस किस्म में करनाल बंट एवं पर्ण चूर्ण आसिता रोगो के लिए भी प्रति उच्च प्रतिरोधता पायी गई हैं।

अनाज की गुणवत्ता

- डीबीडबल्यू 173 के दानो में 10/10 ग्लू स्कोर की 12.5 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है। इसमें उत्कृष्ट चपाती बनाने की विशेषता का स्कोर 7.65/10 पाया गया हैं।
- डीबीडबल्यू 173 के दानों में उच्च जिंक (40.7 पीपीएम) पाया जाता है।

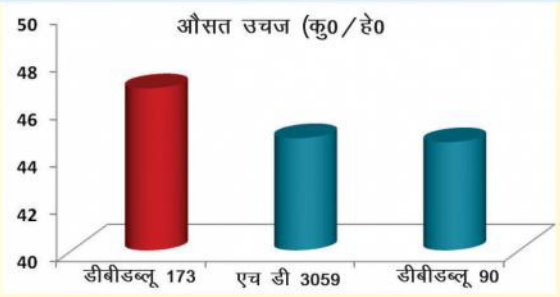

प्रकाशक :

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)
1800 180 1891

Agrisearch with a human touch

विस्तार फोल्डर : 67/2018

डीबीडब्ल्यू 173

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के लिए गेँहू की पछेती किस्म

संकलन एवं संपादन

रवीश चतरथ, अमित शर्मा, सतीश कुमार, ओम प्रकाश, राज कुमार
विनोद तिवारी एवं जी.पी. सिंह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल, 132001 भारत
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research
Karnal-132001 INDIA

वेबसाईट : www.iiwbr.icar.gov.in | कृषक हैल्पलाईन नः (टोल फ्री) 1800 180 1891

डीबीडब्लू 173 के उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता (उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र)	पछेती एवं सिंचित क्षेत्रो जैसे पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर मंडलो एको छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी संभाग को छोड़कर), जम्मू–कश्मीर (जम्मू व कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों (ऊना जिला व पांवटा वैली) और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों (तराई क्षेत्र) मे बुआई के लिए उपयुक्त।
भूमि का चुनाव एवं तैयारी	समतल उपजाऊ मिट्टी का चुनाव करके जुताई पूर्व सिचाई के बाद उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी के लिए डिस्क हैरो, टिलर और भूमि समतल करने वाले यंत्र के साथ जुताई करके खेत को अच्छी तरह कर लेना चाहिए ।
बीज उपचार	2.5 ग्राम विटावेक्स (75 डबल्यूपी) या 2.5 ग्राम कार्बोण्डजीम (50 डबल्यूपी) या टैबोकोनाजोल 1.0 ग्राम नमक कवकनाशी से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित कर बोना चाहिए।
बुआई का समय	10–25 दिसम्बर
बीज दर और अंतराल	120 किलोग्राम/हेक्टेयर तथा पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 20X5 सेमी होनी चाहिए।
उर्वरको की मात्रा एवं उपयोग का समय	नत्रजन, फास्फोरस तथा पोटाश की 120: 60: 40: किग्रा प्रति मात्रा का 1/3 भाग बीजाई के समय तथा शेष 2/3 मात्रा प्रथम नोड अवस्था यानी बुआई के 40–45 दिनों बाद नत्रजन का प्रयोग करना चाहिए ।
खरपतवार नियन्त्रण	पेंडिमथेलिन नामक अंकुरण–पूर्व खरपतवारनाशी की 400ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के दर से बीजाई के 0–3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4–डी. नामक दवा की 200 ग्राम प्रति एकड़ या मेट्स्ल्फुरोन 1.6 ग्राम प्रति एकड़ या कारफेंट्राजोन 8 ग्राम प्रति एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी में का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है । संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40 ग्राम प्रति एकड़ स्ल्फोस्ल्फुरोन की 10 ग्राम प्रति एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए । मिश्रित खरपतवारो के नियंत्रण के लिए 2,4–डी या मेट्स्ल्फुरोन को स्ल्फोस्ल्फुरोन या आईसोप्रोटुरोन के साथ बुआई के 30–35 दिनो बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर अनुक्रमिक छिड़काव किया जाना चाहिए ।
रोग एवं कीट नियन्त्रण	डीबीडब्लू 173 किस्म पीला रतुआ एवं भूरा रतुआ के लिए प्रतिरोधी है परंतु यदि फसल मे पीला एवं भूरा रतुआ, करनाल बंट या चूर्णील फफूंदी रोग के लक्षण दिखाई दे तो उसके नियंत्रण हेतू प्रोपिकोनजोल नामक दवा की 0.1: (1.0 मिली प्रति लीटर) मात्रा का 15 दिनों के अंतराल पर का दो बार छिडकाव करना चाहिए। माहू या चेपा नमक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाकलोपरिड (17.8 एसएल) की 40 मी०ली० प्रति एकड़ मात्रा का छिदकाव करना चाहिए ।
सिंचाई	फसल मे 5–6 सिंचाई की आवश्कता होती है। जिसमे पहली सिंचाई 20–25 दिन बाद तथा उसके बाद 20–25 दिनो के अंतराल सिंचाई करनी चाहिए।
कटाई	यह किस्म 118–125 दिनों (औसत 122 दिनों) में कटाई के लिए तैयार की जाती है।
औसत उपज	इस किस्म से औसतन 18.9 क्विंटल/एकड उपज़ प्राप्त की जा सकती हैं ।

डीबीडब्लू 173 की फसल

डीबीडब्लू 173 के दाने